eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

बुन्देलखण्ड में अवस्थित पुरास्थल

[1]डॉ0 आनन्द गोस्वामी

[1]एसोसिएट प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष–इतिहास, राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, चरखारी (महोबा) उ0प्र0

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

भारत का ह्रदय स्थल बुन्देलखण्ड अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परम्परा और पुरा सम्पदा के लिए विख्यात रहा है। यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल से ही मानव की क्रीड़ा स्थली रहा है, प्रागैतिहासिक मानव ने यहॉ के शैलाश्रयों में न सिर्फ शरण ली वरन यत्र–तत्र चित्रकारी करके अपने बुद्धि–कौशल का भी परिचय दिया। बुन्देलखण्ड वर्तमान में भले ही आर्थिक रूप से पिछड़ा है पर इसका अतीत अत्यंत समृद्ध शाली रहा है। जिस समय भारत के पश्चिमोत्तर में हड़प्पा सभ्यता तत्पश्चात वैदिक सभ्यता विद्यमान थी उस समय यहाँ ताम्र–पाषाणिक संस्कृति अस्तित्व में थी।

Key Words- चेदि महाजनपद, चर्मणवती, वेगवती, दर्शाण, तमसा, शक्तिमती, मुष्ठि कुठार, उत्पादक आस्ट्रेलाइड, जेजाकभुक्ति, विन्ध्येलखण्ड।

Introduction

मध्य काल में बुन्देल राजाओं की क्रीड़ा भूमि जिसे यमुना, नर्मदा और चम्बल का पावन जल–प्रवाह अभिसिंचित करता है,विन्ध्य के सुरम्य अंचल में स्थित इस भू–भाग को ''बुन्देलखण्ड'' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। छठीं शता0 ईसा के पूर्व इसका उत्तरीखण्ड चेदि महाजनपद और पष्चिमी क्षेत्र अवंती महाजनपद के अन्तर्गत था। भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परम्परा और पुरा–सम्पदा के लिये सुविख्यात रहा है यहॉ आदि काल से ही विभिन्न संस्कृतियों का संगम होता रहा है। भौगोलिक दृष्टि से यह भू–भाग बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है डॉ0 रंजन का मत है कि इस का अस्तित्व चालीस करोड़ वर्ष से भी ज्यादा क्रेम्ब्रियान युग का है। यह उफनाते हुये सागर की गोद से सबसे पहले उठा।[1] गंगा–जमुना की अनेक दक्षिणवर्ती नदियों, जिनकी चर्चा पुराणों में की गयी है, का स्रोत यहीं बुन्देलखण्ड में है। पुराणों के अनुसार बुन्देलखण्ड

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

की भूमि रिख्स (ऋक्ष) पर्वत द्वारा निकली नदियों के जल से सिंचित है। डी0 सी0 सरकार प्रभृति अधिकांश विद्वान पुराणों में वर्णित चर्मणवती (चम्बल), वेगवती (बेतवा), मंदाकिनी,दर्शाण (धसान), तमसा (टोंस) एवं शक्तिमति (केन) के अभिजन के सम्बंध में सहमत है।[2] पर डॉ0 रंजन का मत है कि बुन्देलखण्ड विशेषरूप से दस नदियों का देश है– चम्बल, पहूज, काली, सिंध, कुआरी, वेतवा, मंदाकिनी, केन, तमसा और धसान।[3]

पुरातत्ववेत्ता वृजवासीलाल के मतानुसार बुन्देलखण्ड भारत की दो पवित्र नदियों–गंगा और नर्मदा, की घाटियों के बीच सेतु–स्वरूप है।[4] यहॉ इन दोनों नदियों की सांस्कृतिक परम्पराओं ने अपनी–अपनी झलक अलग–अलग तथा मिश्रित रूप में दिखलाई है। यहॉ एक ओर गंगा घाटी में जन्म लेने वाली चित्रित धूसर मृद्भाण्डों (PGW) तथा उत्तरी कृष्णमार्जित मृद्भाण्डों (NBPW) वाली संस्कृतियों ने ईसापूर्व की प्रथम सहस्त्राब्दी के प्रारम्भ में उत्तर की ओर से बुन्देलखण्ड में पदार्पण किया, वहीं नर्मदा घाटी की ताम्राश्य (Chalcolithic) संस्कृति ने दक्षिण की ओर से। इनके सामंजस्य के प्रमाण एरण, विदिशा आदि स्थानों के उत्खनन से उपलब्ध है।

पुरातत्ववेत्ता एस0 डी0 त्रिवेदी का यह स्पष्ट अभिमत है कि बुन्देलखण्ड का क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल से ही मानव की क्रीड़ा स्थली रहा है।[5] ललितपुर के पास उत्खनन से प्राप्त पुरापाषाण काल के मुष्ठि–कुठार (Hand Axes) तथा उत्पाटक (Cleavers) इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इन उपकरणों की प्राप्ति से यह स्पष्ट है कि आज से लाखों वर्ष पूर्व यहॉ आदि–मानव विचरण करता था। नूतन अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि 'आस्ट्रेलोपिथेकस' से मिलती–जुलती जाति ''आस्ट्रेलाइड'' जिन्हें सामान्यतः भारतीय सम्भ्यता का निर्माता माना जाता है, आज से लगभग बीस लाख वर्ष पूर्व यहीं विन्ध्य क्षेत्र के मिर्जापुर में निवास करते थे। प्रागैतिहासिक मानव ने यहॉ के शैलाश्रयों में शरण ली और इनमें यत्र–तत्र चित्रकारी कर अपने बुद्धि–कौशल का परिचय दिया है।

बुन्देलखण्ड कि विस्तार के बारे में विद्धानों में बड़ा मतभेद है। इसकी सीमाओं का निर्धारण विद्धानों ने अपने–अपने ढ़ंग से किया है। पुरातत्ववेत्ता जनरल ''कनिंघम' के अनुसार, बुन्देलखण्ड गंगा–यमुना के दक्षिण तथा पश्चिम में वेतवा नदी से लेकर पूर्व में विन्ध्यवासिनी देवी के मंदिर तक, दक्षिण में चन्देरी, सागर तथा बिलहरी जिलों को शामिल कर नर्मदा तक फैला हुआ था।[6]

सालारजंग संग्रहालय हैदराबाद के पूर्व निदेशक डॉ0 एम0 एल0 निगम ने बुन्देलखण्ड का और भी विस्तृत रूप स्वीकार किया है। आपने कौशम्बी, कोसम, भीटा, त्रिपुरी, सॉची उदयगिरी आदि

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

पुरातात्विक स्थलों को भी बुन्देलखण्ड में शामिल किया है।[7] बुन्देलखण्ड का अधिकतम विस्तार स्वीकार करने वाले विद्धान इसे उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्वदा (रेवा),पूर्व में टोंस (तमसा) तथा पश्चिम में चम्बल (चर्मणावती) से घिरा मानते है।

इस भू–भाग का 'बुन्देलखण्ड' नाम लगभग चौदहवीं शती ई0 में पड़ा। इसके पूर्व यह क्षेत्र चेदि, जुझौति, जेजाकभुक्ति, विन्ध्येलखण्ड आदि नामों से अभिहित किया जाता रहा है। बुन्देलखण्ड आज भले ही आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र हो गया हो पर उसका अतीत अत्यंत समृद्धशाली रहा है, यहॉ की गौरवगाथा सहस्त्राब्दियों पुरानी है। रामायण, महाभारत तथा पौराणिक युग में भी यह क्षेत्र बहुत चर्चित रहा। इस भूखण्ड में वाल्मीकि, अत्रि, शर्मग, सूतिक्षण और अगस्त आदि ऋषियों का आश्रम था, साथ ही श्रीराम बनवास के समय इस पुनीत भूमि पर प्रयाग से चित्रकूट तक घूमते रहे। महाभारत काल में भी श्रीकृष्ण के गुरू महर्षि सान्दिपनि का आश्रम यहीं था। कालपी के सम्बंध में मान्यता है कि वेद व्यास, कृष्णद्वैपायन की जन्मभूमि यही है। यह स्थान चेदि नरेश के अन्तर्गत था। डॉ0 विन्सेन्ट स्मिथ ने ग्यारहवीं शताब्दी के चेदि देश का वर्णन करते हुये उसे बुन्देलखण्ड का क्षेत्र माना है।[8] डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है कि प्राक् मौर्यकाल में चेदि जनपद का अस्तित्व था, यह राज्य जमुना के समीप बुन्देलखण्ड और उसके आसपास के इलाकों में फैला था।[9] बुन्देलखण्ड में यमुना, टोंस, धसान, वेतवा, काली, सिंध आदि नदियों के किनारे पाषाणयुगीन संस्कृति के अवशेष मिले है। इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक शोध कार्य करने का श्रेय डॉ0 एच0 डी0 सांकलिया, प्रो0 जी0 आर0 शर्मा, श्री आर0 बी0 जोशी, प्रो0 के0 डी0 बाजपेयी, श्री रामेश्वर सिंह, डॉ0 पी0 सी0 पन्त आदि विद्धानों को है।

ललितपुर, झॉसी, हमीरपुर तथा बॉदा जिलों में पाषाणकाल के अनेक स्थल खोज निकाले गये है। वेतवा घाटी का श्री रामेश्वर सिंह ने सर्वेक्षण किया है, यहॉ सबसे अधिक महत्वपूर्ण ललितपुर क्षेत्र है, जहॉ से अनेक उद्योगशालाऍ खोज निकाली गयीं है।[10] यहॉ के अधिकांश उपकरण हैन्डेक्स और क्लीवर प्रकार के है। ये उपकरण ग्रेनाइट पत्थर की चिप्पड़ें निकाल कर बनाये गये है। डॉ0 एच0 डी0 सांकलिया ने तो ललितपुर के पास एक खुली पुरा– पाषाणकलीन उद्योगशाला को खोज निकाला है।[11] धसान नदी के तट पर अवस्थित लहचुरा स्थल पुरापाषाणयुगीन उपकरणों के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।[12] झॉसी जिलान्तर्गत वनगवॉ गॉव के आसपास भी पुरापाषाण कालीन उपकरणों की प्राप्ति हुयी है।[13] प्रो0 पी0 सी0 पन्त को बॉदा जिले की नरैनी तहसील में केन नदी के किनारे बेल्हका गॉव में पुरापाषाण काल के कुछ उपकरण मिले है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

बॉदा के मानिकपुर के समीप गोपीपुर और निही नामक स्थल पर आशुलियन उद्योगशाला के अवशेष मिले है।[14] बॉदा जिले में ही यमुना नदी के तट पर बरियारी से पाषाणयुगीन अवशेष मिले है। इसी जनपद के नरैनी कस्बे के समीप स्थित रामचन्द्र पर्वत पर पुरा– पाषाणकाल की उद्योगशाला प्राप्त हुयी है।[15] बॉदा जनपद के ही सिद्धपुर, ऐंचवारा, लोधवारा से अनेक पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुये है।[16] सागर के समीप स्थित धसान नदी पर सिहौरा स्थल से मध्य पाषाणाकाल की उन्नत उद्योगशाला और 321 उपकरण श्री रामेश्वर सिंह द्वारा खोजे गये है। खुजराहो के आसपास जटकरा, बेनीगंज, सकेरा आदि स्थलों से भी पाषाणकालीन अवशेष प्राप्त हुये है।[17]

उल्लेखनीय है कि जिस भारत के पश्चिमोत्तर में हडप्पा सभ्यता और उसके बाद आर्यो द्वारा विकसित वैदिक सभ्यता विद्यमान थी, उस समय यहॉ बुन्देलखण्ड में ताम्र–पाषाणिक संस्कृति अस्तित्व में थी। बुन्देलखण्ड क्षेत्र से प्राप्त पाषाणकालीन कुछ उपकरण–जिनमें प्रारम्भिक पाषाणकाल, पूर्व पाषाणकाल, परवर्ती पूर्व पाषाणकाल, नव पाषाणकाल तथा लघु पाषाणकाल के उपकरण शामिल है, बुन्देलखण्ड छत्रसाल संग्रहालय बॉदा तथा राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ एवं राज्य संग्रहालय लखनऊ में सुरक्षित है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

संदर्भ–सूची

1. डॉ0 रंजन–भोजपुरी और बुन्देलखण्डी का तुलनात्मक अध्ययन, 1965, पृ0 103–104
2. डी0सी0 सरकार– एम0जी0ए0एम0आई0, दिल्ली, 1960, पृ0 47–49
3. वही
4. बृजवासी लाल, बुन्देलखण्ड का पुरातत्व (1984) के प्राक्कथन में। पृ05
5. एस0 डी0 त्रिवेदी, बुन्देलखण्ड का पुरातत्व (1984) पृ0 7–12
6. ए0 कनिंघम, दि एंशियन्ट ज्योग्राफी आफ इण्डिया, पृ0 406
7. एम0 एल0 निगम, कल्चरल हिस्ट्री आफ बुन्देलखण्ड, पृ0 1–24
8. डॉ0 विन्सेन्ट स्मिथ–अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ0 380
9. डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल– प्राचीन भारत का इतिहास, पृ0 84
10. आर0 सिंह, पेल्योलिथिक इन्डस्ट्रीज आफ नार्दन बुन्देलखण्ड, पी–एच0डी0 थीसिस (1965), डकन कालेज, पूना।
11. एच0 डी0 सांकलिया, प्रिहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री इटसेटरा, पृ0 109
12. पी0 सी0 पन्त, प्रिहिस्ट्रारिक उत्तर प्रदेश, दिल्ली (1982) पृ0 39–44, 72–76
13. वही पृ0 45–47
14. वही पृ0 47–54
15. के0 सी0 जैन, प्रिहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री आफ इण्डिया, नई दिल्ली (1979) पृ0 49–50
16. पी0सी0 पन्त, वही, पृ0 88–99, 114–130
17. कृष्ण कुमार, ए स्टडी इन दि स्टोन एज ऑफ खजुराहो इन सेन्ट्रल इण्डिया पुरातत्व नं0–3 (1969–70) पृ0 89–101
18. आई0 ए0 आर0 (1961–62) पृ0 57
19. विदुला जायसवाल, पेल्योहिस्ट्री आफ इण्डिया, दिल्ली (1978) पृ 54
20. वागीश शास्त्री–बुन्देलखण्ड की प्राचीनता, वाराणसी, 1965, पृ0 8
21. विमल चरण लाहा–प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, लखनऊ, 1972 पृ0 83